एस. एस. कॉलेज जहानाबाद
विभाग - हिन्दी
विषय - भाषा विज्ञान, स्नातक प्रतिष्ठा भाग-3
शिक्षण माध्यम - व्हाट्सएप
समय - 11.00 to 12.30, 15.5.2020
शिक्षक - डॉ. रोश शर्मा

पाठ - भाषा विज्ञान की परिभाषा और प्रयोजन

छात्र-छात्राओं!

भाषा विज्ञान की परिभाषा पर विचार करने से पूर्व हमें इस बात पर विचार करना चाहिए कि आखिर यह विज्ञान कैसे है? विज्ञान से मूलतः अभिप्राय विशेष ज्ञान से है। अतः भाषा का सामान्य ज्ञान और विशेष ज्ञान में अन्तर का अध्ययन भाषाविज्ञान कहा जा सकता है। इस संदर्भ में यह जिज्ञासा कि भाषा सबसे पहले कैसे जन्मी होगी, फिर एक मनुष्य से दूसरे मनुष्य की भाषा में अन्तर कैसे आया, भाषा का स्वरूप प्रारम्भिक अवस्था में क्या रहा होगा? ज्ञातव्य है।

यहाँ ~~[illegible]~~ प्रश्न मानस में कुलबुलाता है कि किस अर्थ में भाषाविज्ञान विज्ञान है क्योंकि भौतिक, रसायन, गणित की तरह तो यह विज्ञान नहीं दीखता है फिर यह कैसा विज्ञान है? विज्ञान का सबसे बड़ा आधार है 'कार्य-कारण भाव की नियमता', ऐसा कहना है आचार्य देवेन्द्रनाथ शर्मा का, फिर वे ही प्रश्न भी उठाते हैं कि राजनीतिविज्ञान, समाजविज्ञान या मानव विज्ञान में ऐसी कार्य-कारण भाव की नियमता नहीं देखी जाती। आधुनिक युग में ज्ञान के क्षेत्रों को या कहें शिक्षा जगत के ज्ञान को प्रायः तीन भागों में बाँटा जाता है — भौतिक विज्ञान, सामाजिक विज्ञान और मानविकी। भौतिक विज्ञान में मानवकृत विज्ञान नहीं आता, समाजविज्ञान सामाजिक दृष्टि से मनुष्य के आचार-व्यवहार या क्रिया कलाप का अध्ययन करता है तो मानविकी में वैयक्तिक विज्ञान और सर्जनात्मक विज्ञान का साहित्यिक अध्ययन किया जाता है, ऐसा मानना भी है आचार्य देवेन्द्रनाथ शर्मा का।

मनोविज्ञानविदों ने मानव के मानसिक व्यवहार को समझने के

लिए भाषाविज्ञान को एक साधन के रूप में प्रयोग किया है। इस दृष्टि से 'अनुप्रयुक्त भाषाविज्ञान' भाषा विज्ञान का एक प्रकार है। दरअसल भाषा शिक्षण के लिए 'अनुप्रयुक्त भाषाविज्ञान' भाषाविज्ञान है। अनुप्रयुक्त का अंग्रेजी में समानार्थी शब्द Applied (अप्लाइड) है। यह अनुप्रयुक्त भाषा विज्ञान को अनुप्रयोग भाषा विज्ञान भी कहा जाता है। इन्हें ही ध्यान में रखते हुए डॉ. भोलानाथ तिवारी ने भाषाविज्ञान की परिभाषा इस रूप में दी है —

"भाषाविज्ञान वह विज्ञान है जिसमें भाषा अथवा भाषाओं का एककालिक, बहुकालिक, तुलनात्मक, व्यतिरेकी अथवा अनुप्रयोगिक अध्ययन-विश्लेषण तथा तद्विषयक सिद्धान्तों का निर्धारण किया जाता है।

आचार्य देवेन्द्रनाथ शर्मा भाषाविज्ञान को विज्ञान इसलिए मानते हैं कि उसके नियम भी कार्य-कारण भाव पर आश्रित हैं। चूंकि इन नियमों के अपवाद भी हैं इसलिए आचार्य शर्मा के अनुसार यह शुद्ध विज्ञान की सीमा में नहीं आता पर इसके नियम हैं इसलिए इसका प्रयोग भी व्यापक रूप में होता है। इस प्रकार शुद्ध विज्ञान से अलग इसका मध्यवर्ती रूप है। इसमें नियम और अनुभव दोनों का प्रयोग होता है। इस रूप में भाषा विज्ञान दूसरे विज्ञानों या शास्त्रों के लिए माध्यम होता है तो भाषाविज्ञान के लिए वह साधन और साध्य दोनों है, अर्थात् यहाँ भाषा के द्वारा भाषा का ही विवेचन इस भाषाविज्ञान में होता है।

अध्ययन की सुविधा को ध्यान में रखते हुए भाषा विज्ञान ~~[illegible]~~ को उस विज्ञान की श्रेणी में रख सकते हैं जिसमें भाषा की समस्त पहलुओं, उसके परिवर्तनों, नये स्वरूपों के निर्माण आदि जहां नियमबद्ध वैज्ञानिक विश्लेषण हो उसे भाषा विज्ञान कहा जा सकता है। दरअसल किसी सिद्धान्त की वास्तविक परीक्षा इस बात में होती है कि वह समाज में कैसी प्रतिक्रिया उत्पन्न करता है। इस

चूंकि जब इसका प्रयोजन या इसकी उपयोगिता—जबतक सिद्ध नहीं होती तबतक इसके सिद्धान्तों पर विश्वास नहीं जमता। इससे पहले भाषा विज्ञान का साहित्य के अलावा अन्य दूसरे विषयों से इसके सम्बन्ध कैसे बने हैं, यह विज्ञान है अथवा कला? इसके कितने प्रकार हैं, इसकी कितनी शाखायें हैं? अद्यतन भाषा विज्ञान के आयाम बहुत व्यापक हैं इसमें शैली विज्ञान, अनुवाद विज्ञान, भाषा शिक्षण विज्ञान तथा कोश विज्ञान इत्यादि अनेक आयामों से यह विज्ञान जुड़ता हुआ अपनी विशिष्टता का परिचय देता है। समाज के परिप्रेक्ष्य में भाषा का अध्ययन उसके बोलनेवालों के अन्त: संबंधों में विश्लेषित होता है। उदाहरणार्थ भाषा की सबसे बड़ी इकाई वाक्य में अन्तर्निहित होती है, पर; समाज भाषाविज्ञान इसे प्रोक्ति (इसके बोलने की) को स्थान देता है। भाषा विज्ञान प्राय: समाज से अलग रखकर भाषा की संरचना पर विचार करता है किन्तु 'समाज-भाषाविज्ञान उस अध्ययन को अधूरा मानता है और उसके अनुसार समाज के परिप्रेक्ष्य में ही भाषा का अध्ययन वास्तविक अध्ययन है। यह भी कहा जाता है मानक भाषा और अमानक भाषा और बोली में अन्तर दिखाना भाषाविज्ञान के लिए संभव नहीं है यह अन्तर समाज भाषा विज्ञान ही दिखला सकता है। इस प्रकार भाषाविज्ञान के साथ इतने पहलू जुड़े हुए हैं कि इसका क्षेत्र व्यापक हो जाता है, लेकिन इसकी व्यापकता की भी परीक्षा उपयोगिता में निहित होती है।

इस विषय पर अगली कक्षा में विचार होगा।

15.5.20